११ मोक्खाणुयोगद्दारं

महुवरमहुवरवाउलवियसियसियसुरहिगंधमल्लेहि ।
मल्लिजिणमच्चियूण य मोक्खणुयोगो परूवेमो ॥ १ ॥

मोक्खो त्ति अणुयोगद्दारे मोक्खो णिक्खिवियव्वो-- णाममोक्खो ट्ठवणमोक्खो दव्वमोक्खो भावमोक्खो चेदि मोक्खो चउव्विहो। णाममोक्खो ट्ठवणमोक्खो आगमदो दव्वमोक्खो आगम-णोआगमभावमोक्खो च सुगमो । जो सो णोआगमदो दव्वमोक्खो♠ सो दुविहो कम्ममोक्खो णोकम्ममोक्खो चेदि । णोकम्ममोक्खो सुगमो । कम्मदव्वमोक्खो चउव्विहो पयडिमोक्खो ट्ठिदिमोक्खो अणुभागमोक्खो पदेसमोक्खो चेदि । पयडिमोक्खो दुविहो मूलपयडिमोक्खो उत्तरपयडिमोक्खो चेदि । तत्थ एक्केक्को दुविहो देसमोक्खो सव्वमोक्खो चेदि । तत्थ अट्ठपदं-- जा पयडी णिज्जरिज्जदि अण्णपयडिं वा संकामिज्जदि एसो पयडिमोक्खो णाम । एसो पयडिमोक्खो सुगमो, पयडिउ❀दय-पयडिसंकमेसु अंतब्भावादो । ठिदिमोक्खो दुविहो उक्कस्सो जहण्णो चेदि । एत्थ अट्ठपदं । तं जहा-- ओकड्डिदा वि उक्कड्डिदा वि अण्णपयडिं संकामिदा

मधुको करनेवाले भ्रमरोंसे व्याकुल ऐसे विकसित, धवल और सुगन्धित पुष्पमालाओंके द्वारा मल्लि जिनेन्द्रकी पूजा करके मोक्ष-अनुयोगद्वारकी प्ररूपणा करते हैं ॥ १ ॥

मोक्ष इस अनयोगद्वारमें मोक्षका निक्षेप करना चाहिये-- वह मोक्ष नाममोक्ष, स्थापनामोक्ष, द्रव्यमोक्ष और भावमोक्षके भेदसे चार प्रकारका है। इनमें नाममोक्ष, स्थापनामोक्ष, आगमद्रव्यमोक्ष, आगमभावमोक्ष और नोआगमभावमोक्ष; ये सुगम हैं। जो नोआगमद्रव्यमोक्ष है वह दो प्रकारका है-- कर्ममोक्ष और नोकर्ममोक्ष । इनमें नोकर्ममोक्ष सुगम है । कर्मद्रव्यमोक्ष चार प्रकारका है-- प्रकृतिमोक्ष, स्थितिमोक्ष, अनुभागमोक्ष और प्रदेशमोक्ष। प्रकृतिमोक्ष दो प्रकारका है-- मूलप्रकृतिमोक्ष और उत्तरप्रकृतिमोक्ष । उनमें प्रत्येक देशमोक्ष और सवमोक्षके भेदसे दो प्रकारका है । उनमें अर्थपद बतलाते हैं-- जो प्रकृति निर्जराको प्राप्त होती है अथवा अन्य प्रकृतिमें सक्रान्त होती है, यह प्रकृतिमोक्ष कहलाता है । यह प्रकृतिमोक्ष सुगम है, क्योंकि, उसका अन्तर्भाव प्रकृति-उदय और प्रकृतिसंक्रममें होता है । स्थितिमोक्ष उत्कृष्ट और जघन्यके भेदसे दो प्रकारका है। यहां अर्थपद बतलाते हैं । वह इस प्रकार है-- अपकर्षणको प्राप्त हुई,

---

♠ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-का-ताप्रतिषु 'णोआगमदव्वमोक्खो' इति पाठः । ❀ मप्रतिपाठोऽयम् । अप्रतौ 'णाम सो सुगमो पयडि', काप्रतौ 'णाम पयडि,' ताप्रतौ 'णाम एसो सुगमो, पयडि' इति पाठः ।

वि अधट्ठिदीए* णिज्जरिदा वि ट्ठिदी ट्ठिदिमोक्खो□। एदेण अट्ठपदेण उक्कस्साणुक्कस्स-जहण्णाजहण्णट्ठिदिमोक्खो परूवेयव्वो। अणुभागमोक्खे☼ अट्ठपदं। तं जहा– ओकड्डिदो उक्कड्डिदो अण्णपयडिं संकामिदो अधट्ठिदि✿गलणाए णिज्जिण्णो वा अणुभागो अणुभागमोक्खो। एदेण अट्ठपदेण उक्कस्साणुक्कस्स-जहण्णाजहण्णअणुभागमोक्खो परूवेयव्वो। पदेसमोक्खे❋ अट्ठपदं। तं जहा– अधट्ठिदि♠गलणाए पदेसाणं णिज्जरा पदेसाणमण्णपयडीसु संकमो वा पदेसमोक्खो णाम। एसो वि उक्कस्साणुक्कस्स-जहण्णाजहण्णभेदेण णेयव्वो।

णोकम्मदव्वमोक्खो सुगमो। अधवा, णोआगमदो दव्वमोक्खो मोक्खो मोक्खकारणं मुत्तो चेदि तिविहो। जीव-कम्माणं वियोगो मोक्खो णाम। णाण-दंसण-चरणाणि मोक्खकारणं। सयलकम्मवज्जियो अणंतणाण-दंसण-वीरिय-चरण-सुह-सम्मत्तादिगुणगणाइण्णो णिरामओ णिरंजणो णिच्चो कयकिच्चो मुत्तो णाम। एदेसिं तिण्णं पि णिक्खेव-णय-णिरुत्तिअणुयोगद्दारेहि हेउगब्भेहि परूवणा कायव्वा। एवं कदे मोक्खाणुओगद्दारं समत्तं होदि।

उत्कर्षणको प्राप्त हुई, अन्य प्रकृतिमें संक्रान्त हुई, और अध:स्थितिके गलनेसे निर्जराको भी प्राप्त हुई स्थितिका नाम स्थितिमोक्ष है। इस अर्थपदके आश्रयसे उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य स्थितिमोक्षकी प्ररूपणा करना चाहिये। अनुभागमोक्षके सम्बन्धमें अर्थपदका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है– अपकर्षणको प्राप्त हुआ, उत्कर्षणको प्राप्त हुआ, अन्य प्रकृतिमें संक्रान्त हुआ, और अध:स्थितिगलनके द्वारा निर्जराको भी प्राप्त हुए अनुभागको अनुभागमोक्ष कहा जाता है। इस अर्थपदके आश्रयसे उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य अनुभागमोक्षकी प्ररूपणा करना चाहिये। प्रदेशमोक्षके विषयमें अर्थपद कहते हैं। वह इस प्रकार है– अध:स्थितिगलनके द्वारा जो प्रदेशोंकी निर्जरा और प्रदेशोंका अन्य प्रकृतियोंमें संक्रमण होता है उसे प्रदेशमोक्ष कहा जाता है। इसको भी उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्यके भेदसे ले जाना चाहिये।

नोकर्मद्रव्यमोक्ष सुगम है। अथवा नोआगमद्रव्यमोक्ष मोक्ष, मोक्षकारण और मुक्तके भेदसे तीन प्रकारका है। जीव और कर्मका पृथक् होना मोक्ष कहलाता है। ज्ञान, दर्शन और चारित्र ये मोक्षकारण हैं। समस्त कर्मोंसे रहित; अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्तवीर्य, चारित्र, सुख और सम्यक्त्व आदि गुणगणोंसे परिपूर्ण; निरामय, निरंजन, नित्य और कृतकृत्य जीवको मुक्त कहा जाता है। इन तीनोंकी ही प्ररूपणा हेतुगर्भित निक्षेप, नय और निरुक्ति अनुयोगद्वारोंसे करना चाहिये। ऐसा करनेपर मोक्ष-अनुयोगद्वार समाप्त होता है।

---

* ताप्रतौ 'अवट्ठिदा वि' इति पाठः। □ ताप्रतौ 'वि ट्ठिदी ए (ट्ठि) दिमोक्खो' इति पाठः। ☼ अ-काप्रत्योः 'अणुभागमोक्खो,' ताप्रतौ 'अणुभागमोक्खो (क्खे)' इति पाठः। ✿ अ-ताप्रत्योः 'अवट्ठिदि' इति पाठः। ❋ काप्रतौ 'पदेसमोक्खो' इति पाठः। ♠ अ-ताप्रत्योः 'अवट्ठिदि' इति पाठः।

☼ ☼ ☼